

अनुसूची

मैथिली भाषाका गीत, कविता तथा उखान टुकका

गीतहरू

एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा अनुभवको प्रचारप्रसार

दया करो गंगा मैया, दुनिया दहातवा,
इतना दुःख देला गंगा अब ना सहातवा ।
अचानक मे पानी आइल खेत सब दहातवा,
घर द्वार मकान सब दहातवा,
केहु सुतल केहु उठल केहु बताईतर वा,
आधा रात मे पानी आईल कुछो नाई (सुजाहाता) वा ।
रोवा-रोवा धर्ती माता करि मेरो दनुआ राम,
दौड-दौड कृष्ण भगवान, छुटगेल प्राणवा राम ।

रामु ठाकुरद्वारा गाइएको

श्रीपुर गाविस, सर्लाही जिल्ला

अर्को पिढीमा अनुभवको प्रचारप्रसार

६६ साल के अद्रख कमाल कके गेल,
लखनदेई मे बाढ आईल ता सुन्दरपुर मे चईल गेल ।
जब भाड-फिरवा सब भाडा फिरे गेल, ता लोटे-लोटे धार के पि गेल
जब ओक्रा नसा लागल ता लोटा से मारा-मारी भा गेल,
केक्रो फुटल लोलटा केक्रो कापर फुट गेल ।
आ नोन खोन कानोन सब सस्ता भै गेल,
जब ६६ साल के दाहर मे भिम नदी मे बाढ आगेल,
बाप-बेटा दुनु मिलके विया उखारे गेल,
बेटी-मातारी दुनु मिलके पानपियाई लेके गेल,
भिम नदि के बाढ दुनु के दहाईते चल गेल,
खेरू उसपार से छाती पिटाटे रहगेल,
६६ साल के अद्रख कमाल कके गेल ।

रामइकवाल साहले गाउनु भएको तथा

स्वर्गीय रूदल साहोद्वारा सन् १९९६ मा सङ्गीतबद्ध, पिपरिया गाविस, सर्लाही जिल्ला

बाँटनको लागि याचना

धारा मे घरवा बनाईव, कि जैसे भि गुजार चलाईव ।
गुजार चलाईव हो, गुजार चलाईव ।
बाल -बच्चा भुखे कनाई छन,
कोठली लेकिन साल भर खाली रही छाई ।
गुजार कैसे चलाईव हो गुजार कैसे चलाईव ।
नेपाल सरकार हमानी के ठिकाना नाई खे,
नदी पार बाँधवा बनाईव जैसे भि गुजार चलाईव ।
बाँस काटी मचान बनाईव,
उहे पार बाल बच्चा रखाईव,
बर्षात उहे पार कताईव, गुजार जैसे भि चलाईव ।
सावन महिनामामे विमार बाल-बच्चा,
कही आए-जाए के ना राशता ।
नदि से घरवा दहिब, गुजार कैसे चलाईव ।
गुजार चलाईव हो गुजार चलाईव ।
धारा मे घरवाँ बनाईव, जैसे भि गुजार चलाईव ।

हुलास गिरीद्वारा सङ्गीतबद्ध तथा गाइएको,
लक्ष्मीपुर गाविस, सर्लाही जिल्ला

नदीको प्रकृति

हरदी नाथ जलाधार थियो पहिलेको नाम,
सिँचाई, पिउने पानीको गर्दैथ्यो काम ।
अहिले यो जल्लाद(हत्यारो) भएछ,
मान्छे मार्ने, भगाउने काम गर्दैछ ।

राम रतन यादवद्वारा गाइएको,
देउरी गाविस, धनुषा जिल्ला

ए नदी के यही व्यवहार,
खोला कपडा भा जो पार ।
उठा-उठा भैया किसन,
जलाईध बाढ कराईछ हैरान,
दिया-पुता सब भुखे मराईछन्,
टोकर-कोदारी लाके होवा तैयार ।

गाउँलेहरू, अनुपति, कटरैट गाविस, धनुषा जिल्ला

उस्वाज टुक्का

नदी और साप सोभ्र होकर नइ चलइ है ।

रामकैलाश राय तथा
विजय ठाकुरद्वारा गाइएको, श्रीपुर गाविस, सर्लाही जिल्ला

बैरी तर के बास और नदी पार के चास, एकर कोई ठिकाना नइ खे